अलिफ, बे, पे...

अरविन्द गुप्ता
चित्र: शुभम लखेरा

बचपन में महल्ले की संकरी गली में दो-चार पड़ोसी बच्चों के साथ बैट-बॉल, गिल्ली-डण्डा खेलना आदि ही मनोरंजन का एकमात्र तरीका था। सिनेमा के टिकट औकात से बाहर के थे। घर में कोई अखबार या पत्रिका नहीं आती थी। पर रेडियो और ट्रांजिस्टर पर फिल्मी गीत हमेशा बजते रहते थे। नतीजा यह हुआ कि मुझे उन गीतों में मज़ा आने लगा और उनके शब्द मुझे ज़बानी याद हो गए।

बाबूजी कभी स्कूल नहीं गए थे। बचपन में एक मौलवी साहब ने उन्हें घर पर ही आकर उर्दू सिखाई थी। बाबूजी उर्दू पढ़-लिख लेते थे। उनके पास एक टाइपराइटर भी था जिस पर वे अँग्रेज़ी में चिट्ठियाँ टाइप करते थे। मुझे जब भी मौका मिलता था मैं टाइपराइटर पर कोई पुराना कागज़ लगाकर अपना हाथ आज़माता था। पर बाबूजी को मेरी यह हरकत बिलकुल नापसन्द थी। उन्हें डर था कि कहीं मेरी ठोका-पीटी से टाइपराइटर खराब न हो जाए।

सिनेमा हॉल में घुसने में तो टिकट लगता था। पर उसके बाहर फिल्मी गानों की जो पतली किताबें बिकती थीं, उनकी कीमत सिर्फ 10 पैसे होती थी। इतने पैसे मेरी जेब में होते थे। इन किताबों में गानों के बोल बाईं तरफ हिन्दी में और दाईं तरफ उर्दू में लिखे होते थे। फिर एक दिन मैंने उर्दू का कायदा यानी वर्णमाला खरीदी। जल्द ही मैं अलिफ, बे, पे...... (उर्दू के अक्षर) सीख गया। और फिर कुछ ही दिनों में मैं धीरे-धीरे करके उर्दू में लिखे फिल्मी गानों को भी पढ़ने लगा।

शुरू में मैं अक्सर अटक जाता था। तब मैं बाईं ओर हिन्दी में लिखे बोलों को पढ़कर फिर उसे उर्दू में पढ़ने लगता था। इससे मुझे एक बात ज़रूर समझ में आई। अगर मैं उर्दू सीखने की शुरुआत ग्रामर से करता तो कहीं का नहीं रहता। पर क्योंकि मैंने अपने पसन्दीदा फिल्मी गीतों से शुरुआत की इसीलिए मैं इस खूबसूरत ज़ुबां को बहुत तेज़ी-से पढ़ना सीख पाया। तब से मैंने एक कसम खाई। कोई बात चाहे कितनी भी आध्यात्मिक हो, कितनी भी विद्वत्तापूर्ण हो, अगर वो उबाऊ हो तो मैं उससे कोसों दूर रहता हूँ।

بازیچۂ اطفال ہے دنیا مرے آگے

بازیچۂ اطفال ہے دنیا مرے آگے
ہوتا ہے شب و روز تماشا مرے آگے

اک کھیل ہے اورنگ سلیماں میرے نزدیک
اک بات ہے اعجاز مسیحا مرے آگے

جز نام نہیں صورت عالم مجھے منظور
جز وہم نہیں ہستی اشیا مرے آگے

ہوتا ہے نہاں گرد میں صحرا مرے ہوتے
گھستا ہے جبیں خاک پہ دریا مرے آگے

مت پوچھ کہ کیا حال ہے میرا ترے پیچھے
تو دیکھ کہ کیا رنگ ہے تیرا مرے آگے